परिवार की विशेषताएँ (Characteristics of Family)

मकीवर और पेज ने आठ विशेषताओं का उल्लेख किया है जो परिवार को सम्पूर्ण सामाजिक संरचना में सबसे महत्वपूर्ण इकाई बना देती है।

(1) सर्वव्यापकता (Universality)—

सभी सामाजिक संस्थाओं और समितियों में परिवार सबसे अधिक व्यापक है। यह सभी सभ्य व आदिम समाजों में विद्यमान है और सामाजिक विकास के सभी स्तरों में यह किसी न किसी रूप में अवश्य पाया जाता है। एण्डरसन (Anderson) का कथन है कि, "परिवार का एक रूप वह है जिसमें हम जन्म लेते हैं (Family of orientation), तथा दूसरा रूप वह है, जिसमें हम स्वयं बच्चों को जन्म देते हैं (Family of procreation)। परिवार की सार्वभौमिकता इसी बात से स्पष्ट हो जाती है कि हम में से कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो परिवार के इन दोनों स्वरूपों में से एक का भी सदस्य न हो।"

(2) रचनात्मक प्रभाव (Creative Influence)—

परिवार का प्रभाव इसलिए रचनात्मक है कि इसका उद्देश्य किसी विशेष सदस्य को लाभ न पहुँचाकर सभी के हितों को समान महत्व देना होता है। परिवार में माता-पिता का बच्चों पर स्थायी प्रभाव पड़ता है और वे स्वयं भी बच्चों की परिस्थितियों से प्रभावित होते हैं। यह प्रभाव जीवन के आरम्भिक काल से लेकर अन्तिम समय तक बना रहता है और सभी सदस्य इसके महत्व को स्वीकार करते हैं।

(3) भावनात्मक आधार (Emotional Basis)—

भावनात्मक आधार पर मिल-जुल-कर कार्य करने की भावना का होना। पति-पत्नी के सम्बन्ध, माँ का स्नेह, पालन-पोषण की व्यवस्था पिता द्वारा दी गयी सुरक्षा और सदस्यों में पारस्परिक त्याग की भावना आदि कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जो सदस्यों को भावनात्मक आधार पर एक-दूसरे से बाँधे रखती है।

(4) छोटा आकार (Limited Size)—

परिवार के सदस्य केवल वही व्यक्ति होते हैं जिन्होंने इसमें जन्म लिया हो, विवाह किया हो अथवा परिवार की स्थापना करने वाले व्यक्तियों के निकट सम्बन्धी हों। तो भी संयुक्त परिवार अन्य समूहों की अपेक्षा बहुत सीमित आकार के होते हैं। औद्योगीकरण के वर्तमान युग में तो परिवारों का आकार इतना सीमित रह गया है कि साधारणतया इनमें पति-पत्नी और उनके अविवाहित बच्चों के अतिरिक्त किन्हीं भी दूसरे व्यक्तियों को सम्मिलित नहीं किया जाता।

(5) सामाजिक ढाँचे का केन्द्रीय स्थिति (Nuclear Position in the Social Structure)—

सम्पूर्ण सामाजिक ढाँचे में परिवार का स्थान केन्द्रीय है जिस प्रकार सभी वस्तुओं और सभी स्थानों में केन्द्रीय भाग का विशेष महत्व होता है, उसी प्रकार परिवार भी समाज की केन्द्रीय इकाई होने के कारण सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। परिवार का कोई सदस्य किसी भी कार्य को करते समय परिवार के हितों का ध्यान अवश्य रखता है क्योंकि परिवार का संगठन सामाजिक संगठन की प्रारम्भिक स्थिति है। अरस्तु ने समुदाय की परिभाषा करते हुए उसे 'परिवार का सकलन' कहकर ही सम्बोधित किया था। इसका तात्पर्य यही है कि

परिवार का संगठन ही समुदाय अथवा सामाजिक ढाँचे का आधार है।

(6) सदस्यों का असीमित उत्तरदायित्व (Unlimited Responsibility of the members)—

एक व्यक्ति परिवार के अतिरिक्त दूसरे सभी समूहों में केवल उतना ही उत्तरदायित्व लेने को तैयार होता है जो उसकी आवश्यकता और क्षमता के अनुकूल हो, लेकिन परिवार वह स्थान है जहाँ व्यक्ति निजी हितों को भूलकर - अपनी आवश्यकताओं और क्षमता से भी अधिक कर्त्तव्यों को पूरा करने को तैयार रहता है।

(7) सामाजिक नियमन का आधार (Social Regulation)—

प्रत्येक परिवार में अपने कुछ निश्चित नियम होते हैं जिन्हें हम सामान्य रूप से 'वंश-परम्परा' के नाम से जानते हैं। परिवार के नियम किसी एक विशेष क्षेत्र में ही व्यक्ति के जीवन को प्रभावित नहीं करते बल्कि पारस्परिक सम्बन्धों, शिष्टाचार, व्यवहार, रीति-रिवाज, धर्म, शिक्षा, और कर्त्तव्य-बोध आदि सभी क्षेत्रों में परिवार के नियम ही शक्ति पर नियन्त्रण रखकर सामाजिक जीवन को नियमित बनाते हैं।

(8) परिवार का स्थायी व अस्थायी स्वभाव (The Permanent and Temporary Nature of Family)—

मैकीवर ने परिवार की अन्तिम विशेषता में परिवार के दो रूपों का उल्लेख किया है। इसका तात्पर्य यह है कि परिवार एक समिति भी है और संस्था भी। एक समिति के रूप में परिवार पति-पत्नी, बच्चों अथवा कुछ अन्य व्यक्तियों का समूह है। इस रूप में परिवार अस्थायी (Temporary) है क्योंकि विवाह-विच्छेद, मृत्यु, बच्चों के विवाह अथवा नये शिशु के

जन्म के कारण परिवार के आकार में परिवर्तन हो जाना स्वाभाविक है। यदि परिवार को कुछ नियमों और कार्य-प्रणालियों की व्यवस्था के रूप में देखा जाए तब परिवार एक संस्था होगी और संस्था के रूप में परिवार स्थायी है। पति और पत्नी अथवा किसी अन्य सदस्य के न रहने पर भी परिवार के नियम सदैव बने रहते हैं। इस प्रकार परिवार का रूप स्थायी भी है और अस्थायी भी।